International Journal of Sanskrit Research 2023; 9(1): 81-84

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2023; 9(1): 81-84
© 2023 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 17-11-2022
Accepted: 21-12-2022

डॉ0 रुद्रेतपाल आर्य
प्राचार्य, सर एम0 यू0 डिग्री कॉलेज, सहावर, कासगंज, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ0 रुद्रेतपाल आर्य
प्राचार्य, सर एम0 यू0 डिग्री कॉलेज, सहावर, कासगंज, उत्तर प्रदेश, भारत

इक्कीसवीं सदी में संस्कृत वाड्0मय से अपेक्षायें एवं चुनौतियाँ

डॉ0 रुद्रेतपाल आर्य

सारांश
वर्तमान में संस्कृत भाषा को कठिन, दुरूह एवं प्राय: मृतभाषा माना जाता है। यहाँ तक कि इसे बीते जमाने की भाषा नाम से भी सम्बोधित कर दिया जाता है। परन्तु सम्बोधक यह भूल जाते हैं कि संस्कृत भाषा ही विश्व की सबसे प्राचीन तथा जगत् में प्रचलित सभी भाषाओं की एकमात्र जननी भी है। संस्कृत भाषा के अतिरिक्त अन्य कोई ऐसी भाषा नहीं है जिसे 'देवभाषा' के नाम से सम्बोधित किया गया हो। यही एक सरल, सरस, मधुर, मन्जुल, संस्कारप्रदाता भाषा है शेष तो रसहीन, कठिन, एवं संस्कारहीन भाषाएँ हैं। संस्कृत वाड्०मय के कारण ही हमारा देश निखिल विश्व में 'ज्ञानगुरु' की उपाधि से विभूषित हुआ। अतएव 21 वीं शदी में भी संस्कृत वाड्०मय उपादेय है।

कूटशब्द: मनीषा, विरुद, दुरभिसन्धि, प्रणयन, विहनन अपाकरण आदि।

प्रस्तावना
हमारा यह भारतवर्ष निखिल विश्व को ज्ञान की अभिनव रश्मियों से आलोकित करते हुए जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में समुचित दिशा और दशा प्रदान करने वाला 'विश्व गुरू' और वैभवशाली राष्ट्र रहा है। इसी कारण प्राचीन कवियों ने इसकी प्रशस्ति में लिखा है-

भाति सर्वेषु द्वीपेषु रतिर्सर्वेषु जन्तुषु।
तरणं सर्व तीर्थानां तस्माद्भारतमुच्यते।।

यहाँ की पवित्र मनीषा ने अपने तप: प्रभाव से स्वर्ग को भी अपनी ओर समाकृष्ट किया है, जैसा कि स्पष्ट है-

गायन्ति देवा: किल गीतकानि धन्यास्तु ते भारत भूमि भागे।
स्वर्गापवर्गास्पदहेतु भूते भवन्ति भूय: पुरुषा: सुरत्वात्।।

यहाँ के साक्षात्कृतधर्मा ऋषियों ने आजीवन घनघोर तपस्याएँ करते हुए वेद की पावन ऋचाओं का अपने अतिमानस में साक्षात्कार किया तथा उनकी ११२७ शाखाओं का प्रणयन, अनुशीलन, सम्बर्धन और संरक्षण करते हुए 'उपवेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनषिद्, वेदांग, उपांग, साहित्य, आयुर्वेद, विज्ञान, गणित, इतिहास और विविध काव्य पुराणादि का लेखन कर अपनी विजय वैजयन्ती का कीर्तिकेतु फहराया है। जीवन का कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं रहा जो कि उनकी पवित्र लेखनी से उपस्पृष्ट न हुआ हो। वे तो सगर्व घोषणा करते हैं-

अग्रतश्चतुरो वेदान् पृष्ठत: शशरं धनु:।
उभाभ्यां समर्थोऽस्मि शापादपि शरादपि।।

यही कारण है कि पुराकाल के भारतवर्ष ने सभी क्षेत्रों में स्पृहणीय उन्नति की और 'सोने की चिड़िया' जैसे महिमा मण्डित 'विरुद' को सम्प्राप्त किया। यही विश्वगुरु भारत ऋषियों का प्यारा भारत, वीरों की विलास भूमि, सतियों की जौहर भूमि, सिंह शावकों के दाँत गिनने वाले वीर बालकों की क्रीडाभूमि, चन्द स्वार्थियों की तुच्छ स्वार्थसिद्धि के वैमनस्य से उत्पन्न 'फूट' के कारण सैकड़ों वर्षों तक वैदेशिक दासता की ऋंखलाओं में जकड़ा रहा और अपने गौरवपूर्ण अतीत को भुलाकर 'आर्य' से 'हिन्दु' बनकर काफिर, चोर, गुलामों का 'नापाक' देश कहलाया। यह सच है कि अनगिनत अमरहुतात्माओं के अगणित बलिदानों के बाद भारत के भाग्याकाश में १५ अगस्त सन् १९४७ को स्वतन्त्रता का सूर्योदय हुआ और सभी ने 'अपनी ही जमीं होगी और अपना आसमाँ होगा' जैसे स्वर्णिम स्वप्नों को देखते हुए इसका सजलनयनों से स्वागत किया।

जहाँ तक संस्कृत साहित्य का प्रश्न है स्वतन्त्रता के बाद अनेक महाकाव्य, खण्डकाव्य, गीतिकाव्य, कथासंग्रह, नाटक, उपन्यास, प्रहसन, एवं वेद- दर्शन व्याकरण, साहित्य, भाषा- विज्ञान, शिक्षा, कल्प, निरुक्त, छन्द:शास्त्र और आयुर्वेद से सम्बन्धित सहस्रों शोध ग्रन्थों का प्रणयन हुआ है और माँ गीर्वाणवाणी की गोद में अनगिनत लाड़ले कवि और लेखक तथा गम्भीर समालोचक खेले हैं। इनके समग्र व्यक्तित्व और कर्तृत्व को संस्कृत साहित्य के ऐतिहय ग्रन्थों में भलीभाँति देखा जा सकता है। स्वातन्त्र्य समवाप्ति के ३/४ दशकों तक ऐसा लगता रहा ' ऋूयतेऽमृतं मधुरं, संस्कृतं हिततोऽधिकम्' अनेक संस्कृत विद्यालय, महावि0, वि0वि0 इसके प्रचार-प्रसार और अध्ययनाध्यापनार्थ स्थापित हुए तथा उनसे असंख्य विद्वान् और विदुषियाँ सुयोग्य स्नातकों के रूप में निर्गत हुए, किन्तु आज हम 21वीं सदी के भारत में आकर खड़े हो गये हैं जहाँ सम्पूर्ण परिदृश्य पूर्ण तया बदला हुआ नजर आ रहा है। यहाँ व्यक्ति का खान-पान, रहन-सहन, और आचार-विचार, सब कुछ बदल गया है। भूमण्डलीकरण की वयार के असहय थपेड़े दिल-दहलाने लगे हैं। विज्ञान और कम्प्यूटर की नेत्र दीपक उपलब्धियाँ विश्वमानस को अभिभूत कर रहीं हैं। इन्हीं को उन्नति-प्रगति और सुख-शान्ति का प्रमुख मानदण्ड मान लिया गया है। धन-वैभव, पद-प्रतिष्ठा और योग की अधिकाधिक सामग्री को एकत्रित करना ही मानवजीवन का एकमात्र लक्ष्य बनकर उभर रहा है। यहाँ एक ओर अन्धश्रद्धा पुष्पित और पल्लवित हो रही है तो दूसरी ओर श्रद्धाविहीन 'मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्य देवो भव, राष्ट्रदेवो भव' जैसी पवित्र धारणाएँ दम तोड़ रहीं हैं। नैतिकता का ह्रास और शाश्वत जीवन

मूल्यों की विस्मृति चतुर्दिक अशान्ति, अतृप्ति, राग-द्वेष और ईर्ष्या को जन्म दे रही हैं। इधर प्रिन्ट मीडिया और दूरदर्शन दोनों ही अत्यन्त वीभत्स रूप में अपसंस्कृति को परोसने की होड़ में लगे हुए हैं। सिनेमा तथा अन्य संचार माध्यमों ने जीवन को इतना अस्वाभाविक और बोझिल बना दिया है कि बहुत कुछ करता हुआ भी आदमी अपने को अकेला और खाली-खाली अनुभव कर रहा है। वह भौतिक मकड़जाल में उलझ कर इतना व्यस्त हो गया है कि समस्त होने की बात सोच ही नहीं पाता है। उसका प्रत्येक मूल्य बाजारीकरण पर आधृत हो गया है। ऐसे में उसे न पढ़ने में रुचि और न लिखने में। उसे एक ५० पैसे का पोस्टकार्ड लिखना भारी पड़ता है, ५० रू0 की दूरभाषवार्ता नहीं। आशा यही है कि उसे जहाँ टके का लाभ दिखाई देता है वहाँ तो वह रुकता है और जहाँ ऐसा नहीं है वहाँ वह समय को बर्बाद करना अनुचित मानता है। ऐसी दुरभिसन्धि में साहित्य से उसका प्रायश: विलगाव सा हो गया है। यही कारण है कि अत्यावश्यक दैनिक समाचार पत्र का वाचन करते समय वह 'मोटे-मोटे' हेडिंग पढ़कर ही अपना काम चला लेता है, वह न तो सम्पादकीय पढ़ता है न अग्रलेख। कारण समयाभाव है।

जहाँ तक संस्कृत-साहित्य के अध्ययन और प्रणयन का प्रश्न है उसकी अवस्था तो और भी गम्भीर है। यहाँ साहित्यकार भी कम हैं और उनके पाठक व प्रकाशन भी नगण्य से ही हैं। जो भी लेखक और कविगण हैं उनमें से अधिकांश उम्र के ६० वसन्त देख चुके हैं तथा कुछ इसके करीब आ चुके हैं। जैसे - डॉ0 सत्यव्रत शास्त्री - दिल्ली, डॉ0 रेवा प्रसाद द्विवेदी, डॉ0 रमाकान्त शुक्ल, प्रो0 हरेराम शास्त्री, पं0 दुर्गाप्रसाद शास्त्री, डॉ0 वासुदेव कृष्ण चतुर्वेदी, डॉ0 चन्दनलाल पाराशर, डॉ0 सुभाष विद्यालंकार, प्रो0 सुधाकराचार्य, डॉ0 भास्कराचार्य त्रिपाठी, डॉ0 विशुद्धानन्द मिश्र आदि। इनके अतिरिक्त कुछ ऐसे लेखक भी विद्वान हैं जिनका न काव्यशिल्प उत्तम है और न भावसम्पदा। उनकी रचनाओं में संस्कृतेतर भाषा शब्दों का प्रचुर प्रयोग सभी समालोचकों को ही नहीं खलता अपितु पाठक वर्ग भी उसे देखकर उद्विग्न हो उठता है। तद्यथा- 'मीनो खेलति खेलम् , मानवशीलं कथं न धरसे, सिगरटम् - (सिगरेट) कोटपैण्टम् , एकनेचरा, टीचरों, वैरीगुडम् , जेबात् - (जेब से) , जासूसानाम् (गुप्तचरों) के हुक्काचुम्बनपेशला:। हास्य के नाम पर कुछ कविगण हिन्दी चुटकलों को संस्कृत में अनूदित कर के परोस रहे हैं जो कतई उचित प्रतीत नहीं होता है। आज 21वीं शती में अपने कदमों को पदार्पण करने से पहले हम सबके सामने कुछ अपेक्षाएँ एवं चुनौतियाँ भी हैं जिनका सामना करना आवश्यक है-

1. राष्ट्रीयैकताखण्डता की रक्षा हेतु राष्ट्रसेवा व्रत की प्रबल प्रेरणा कान्तासम्मित तया कैसे दी जाय।
2. स्वार्थमूलक भ्रष्टाचार के विहनन हेतु जनान्दोलन कैसे चलाया जाय।
3. वैश्विक आतंकवाद के जनक साम्प्रदायिक उन्माद का अपाकरण कैसे सुनिश्चित हो।
4. युवाओं में बढ़ती हुई हिंसा और कामुकता की दुष्प्रवृत्ति को कैसे रोका जाये।
5. जाति विरादरीवाद और भाई भतीजावाद से निजात कैसे पाई जाये।
6. व्यक्ति की व्यक्ति से बढ़ती हुई दूरी को घटाकर उसे पुन: प्रेमबन्धन में कैसे बाँधा जाये।
7. 'न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्य: अमृतत्वस्य त्वा शा नास्ति। आत्मा वा अरे दृष्टव्य: श्रोतव्यो मंतव्यो निदिध्यासितव्य:।' जैसे यार्थार्थ्य को जनमानस में कैसे प्रसारित किया जाये।
8. आयुर्वेद के विषय में तथा पर्यावरणशोधनार्थ भी अनुसन्धानात्मक ग्रन्थों का अभिनव परिवेश में लेखन होना चाहिए।

मेरे निबन्ध का आशय इस प्रकार है जब 21वीं शदी की अपेक्षा पूरी हो सकती है-

भारतभूषा संस्कृत भाषा, विलसतु ह्रदये-ह्रदये।
संस्कृति रक्षा राष्ट् समृद्धिः, भवतु हि भारत देशे।।

भारतभूषा संस्कृत भाषा, विलसतु ह्रदयेह्रदये।-
संस्कृति रक्षा राष्ट् समृद्धिः, भवतु हि भारत देशे।।

सन्दर्भ

1. द्र0 परिवर्तनम् पृ । २४।
2. द्र0 परिवर्तनम् पृ ।२६।
3. द्र0 परिवर्तनम् पृ।९२।
4. द्र0 लाभः उत् हानि।
5. द्र0 वहीं।
6. द्र0 संस्कृतभारती भूमिका।
7. द्र0 वहीं पृ0 १३।
8. द्र0 वहीं पृ0 ५३-५४।